



## अद्वैत आश्रम की 125वीं वर्षगाँठ

### चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड में [रामकृष्ण मठ और मशिन का केंद्र](#), मायावती में अद्वैत आश्रम की 125वीं वर्षगाँठ मनाई गई

- इस उपलब्धिके उपलक्ष्य में हाल ही में मायावती में दो दविसीय कार्यक्रम आयोजित कयिा गया था ।

### मुख्य बडुः

- आश्रम की स्थापना [स्वामी वविकानंद](#) ने वर्ष 1899 में की थी ।
- आश्रम का उददेश्य अनुषठानकिक परंपराओं से मुक्त **अद्वैत दर्शन का अध्ययन, अभ्यास और प्रचार** करना है तथा इसका प्रसार करने में दूसरों को प्रशकषित करना भी है ।
  - थोडे ही समय में आश्रम पूरव और पश्चमिके सर्वोत्तम वचिरधाराओं का केंद्र बडु बन गया । इसने मूल अद्वैत सडिधांत का प्रसार करने में मदद की ।
- कोलकाता में अद्वैत आश्रम की स्थापना इसके **प्रकाशनों** और पत्रकिका 'प्रबुद्ध भारत' की बडुती मांग को पूरा करने के लयि मायावती आश्रम के 21 वर्ष बाद की गई थी ।
- **अद्वैत वेदांत** हडुि धरुम का मूल है, जो मानव जातिका अस्ततित्व और एकजुटता की शकषिा देता है ।
  - पछिले 125 वर्षों से अद्वैत आश्रम अपनी कोलकाता शाखा से प्रकाशतिका साहतिय के माध्यम से अद्वैत वचिरधारा के सडिधांतों का प्रसार कर रहा है ।

### अद्वैत वेदांत

- यह शुद्ध अद्वैतवाद की एक दारुशनकिक स्थतिका स्पषुट करता है, एक पुनरीकषण वशिवडुषुटजिो यह **प्राचीन उपनषिद ग्रंथों** से संबद्ध है ।
- अद्वैत वेदांतियों के अनुसार, उपनषिद अद्वैत के एक मौलकिक सडिधांत को प्रकट करते हैं जसि 'ब्रह्म' कहा जाता है, जो सभी वसतुओं की वास्तवकिका है ।
- अद्वैतवादी **ब्रह्म को वयकृततिव और अनुभवजन्य बहुलता से परे समझते हैं** । वे यह स्थापतिका करना चाहते हैं ककिसी **वयकृतकिका मूल (आत्मन) ब्रह्म** है ।
- अद्वैत वेदांत का मूल ज़ोर यह है क **आत्मा शुद्धाद्वैत/ शुद्ध अनैच्छकिके चेतना** है ।
- यह बनिा कसिी दवतीय, अद्वैत, अनंत अस्ततित्व वाला और संख्यात्मक रूप से ब्रह्म के समान है ।

### स्वामी वविकानंद

- उनका जन्म **12 जनवरी, 1863** को **नरेंद्र नाथ दत्त** के रूप में हुआ था ।
- वह एक **साधु और रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शषिय** थे ।
- उन्होंने **वेदांत और योग** के भारतीय दर्शन को पश्चमिी वशिव में पेश कयिा तथा उन्हें अंतरधरुमकिक जागरूकता बडुाने, 19वीं सदी के अंत में हडुि धरुम को वशिव मंच पर लाने का श्रेय दयिा जाता है ।
- उन्होंने वर्ष **1987** में अपने गुरु **स्वामी रामकृष्ण परमहंस** के नाम पर रामकृष्ण मशिन की स्थापना की । संस्था ने भारत में वयापक शैकषणकिक और परोपकारी कार्य कयिे ।
- उन्होंने वर्ष **1893** में **शकिकागो (U.S.)** में आयोजतिका प्रथम धरुम संसद में भी भारत का प्रतनिकितिव कयिा ।

